गंगा में दूध चढ़ाने से मिलते हैं ये अनगिनत लाभ

मां गंगा की पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है। साथ ही, मां गंगा का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। व्यक्ति को मृत्यु के बाद मोक्ष मिलता है। वहीं, ज्योतिषाचार्य ने बताया कि मां गंगा की पूजा के दौरान या गंगा स्नान के दौरान गंगा में दूध भी चढ़ाना चाहिए। आइये जानते हैं इसके पीछे का महत्व एवं इससे मिलने वाले लाभ।

गंगा में दूध चढ़ाने से मिलती है शिव कृपा
मां गंगा का वास शिव जी की जटाओं में माना गया है। ऐसे में मां गंगा की पूजा से शिव जी भी प्रसन्न हो जाते हैं। साथ ही, मां गंगा में दूध चढ़ाने से उतना ही पुण्य प्राप्त होता है जितना पुण्य शिवलिंग पर दूध चढ़ाने से मिलता है। गंगा में दूध चढ़ाने से भगवान शिव की कृपा होती है और व्यक्ति को महादेव का सानिध्य प्राप्त होता है।
गंगा में दूध चढ़ाने से दूर होता है दोष
गंगा में दूध चढ़ाने से ग्रह दोष भी दूर हो जाते हैं। कुंडली में कैसा भी ग्रह दोष क्यों न लग रहा हो, अगर आप उतने सक्षम नहीं है कि ग्रह दोष दूर करने के लिए किसी भी प्रकार की पूजा करवा पाएं तो आप बस गंगा में पूर्ण श्रद्धा से 11 दिनों तक एक छोटी लुटिया में दूध भरकर अर्पित करें। इससे ग्रह दोष से दूर हो जाएगा।
गंगा में दूध चढ़ाने से मिटते हैं पाप
गंगा में स्नान करने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है, लेकिन वहीं अगर गंगा में दूध अर्पित किया जाए तो इससे पीढ़ी दर पीढ़ी से चले आ रहे दोषों एवं पापों का निवारण हो जाता है। व्यक्ति के पूर्वजों और उसकी आने वाली पीढ़ी को मां गंगा की कृपा से पाप चक्र के फल से मुक्ति मिलती है। साथ ही, पुण्यों में वृद्धि भी होती है।
गंगा में दूध चढ़ाने से मिलती है दिव्य ऊर्जा
गंगा में दूध चढ़ाने से सकारात्मकता का संचार होता है और व्यक्ति के भीतर, आसपास या घर में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है। गंगा में दूध अर्पित करने से व्यक्ति के भीतर दिव्य ऊर्जा का संचार होता है और व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति मिलती है जिससे उसकी भक्ति में बढ़ोतरी होती है और शांति प्राप्त होती है।

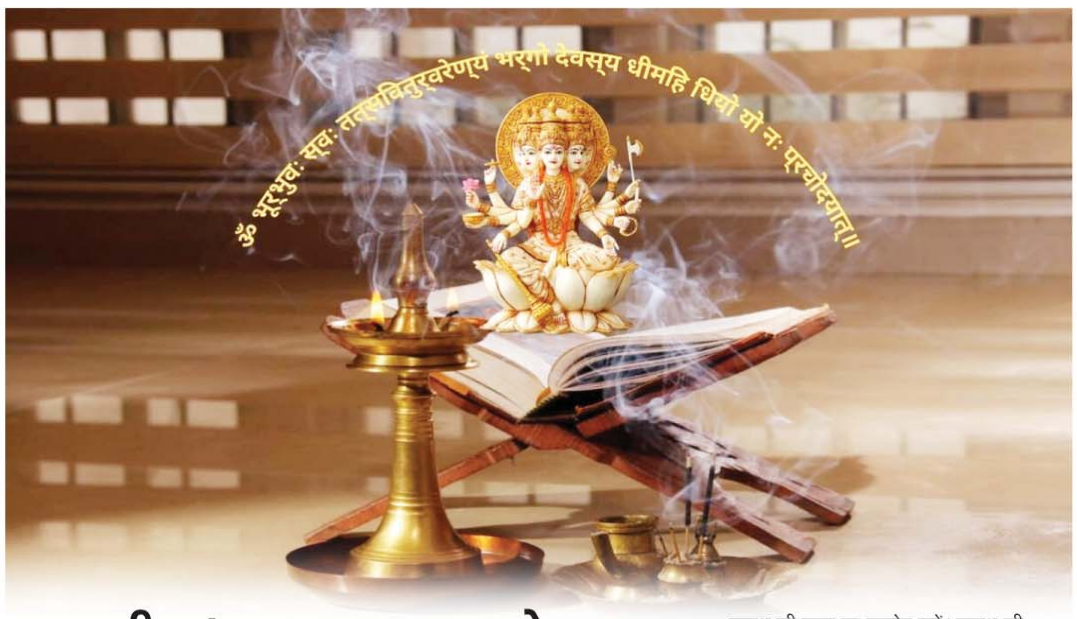

गायत्री मंत्र का जाप करते समय भूलकर भी न करें ये गलतियां

फायदे की जगह हो सकते हैं नुकसान

गायत्री मंत्र को समस्त मंत्रों में श्रेष्ठ माना जाता है, यदि आप इस मंत्र का जाप करते हैं तो कुछ नियमों का पालन करना जरूरी माना जाता है। ऐसा करने से आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

हिंदू धर्म में किसी भी मंत्र के जाप का विशेष महत्व है और हर मंत्र के उच्चारण का विशेष तरीका है। मंत्रों के जाप से मन को शांति मिलती है और शरीर में भी एक अलग ऊर्जा का वास होता है। यदि आप सुबह शाम मंत्रों का जाप नियम पूर्वक करते हैं तो ये कई तरह से लाभदायक होते हैं। इन्हीं मंत्रों में से एक है गायत्री मंत्र। इसके जाप से आसपास का वातावरण शुद्ध होता है और घर में खुशहाली बनी रहती है। गायत्री मंत्र के जाप करने का जीवन में विशेष महत्व है। यही नहीं मान्यता है कि यदि आप नियमित रूप से गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तो आपके जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलती है। गायत्री मंत्र वह मंत्र है जो आपके आत्मबल को मजबूत करने में मदद करता है। ऐसा माना जाता है कि गायत्री मंत्र का जाप आपको कुछ विशेष नियमों के अनुसार ही करना चाहिए अन्यथा इसके फायदों की जगह नुकसान हो सकते हैं।

तामसिक लोगों को नहीं करना चाहिए गायत्री मंत्र का जाप

यदि आप गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तो ध्यान रखें कि आपको मांस-मदिरा या तामसिक भोजन का भोग करके इस मंत्र का जाप नहीं करना चाहिए। गायत्री मंत्र को अत्यंत शक्तिशाली मंत्र माना जाता है और यदि तामसिक जीवन जीने वाले इस मंत्र का जाप करेंगे तो इसके फायदे की जगह नुकसान होने लगेंगे। ऐसा करना मंत्रों का अपमान माना जाता है और आपको इस मंत्र के सकारात्मक फल नहीं मिलते हैं।

बिना स्नान के न करें गायत्री मंत्र

गायत्री मंत्र का जाप हमेशा स्नान करने के बाद ही करना चाहिए। आप इस मंत्र को जिस समय भी पढ़ें ध्यान में रखें कि पहले आप स्नान करके साफ़-सुथरे वस्त्रों को धारण करें उसके बाद ही इस मंत्र का जाप करें। कभी भी इस मंत्र का जाप आपको बिना स्नान किए हुए नहीं करना चाहिए और गंदे वस्त्रों को पहनकर भी नहीं करना चाहिए। यदि आप इस मंत्र का जाप इन नियमों से नहीं करते हैं तो यह आपके लिए नुकसान पहुंचा सकता है।

मंत्र जाप में एक ही आसन का में करें प्रयोग
गायत्री मंत्र का जाप करते समय आपको सबसे ज्यादा इस बात का ध्यान रखने की जरूरत होती है कि आपको हमेशा एक ही आसन पर बैठकर मंत्र जाप करना चाहिए। आपको रोज अलग आसन और अलग स्थान पर बैठकर मंत्र जाप नहीं करना चाहिए। यदि आप रोज नए आसन का इस्तेमाल करते हैं तो आपको इसके नुकसान हो सकते हैं और मंत्र जाप का फल भी नहीं मिलेगा।
कभी ही अशुद्ध मन से न करें गायत्री मंत्र
कई बार हम पूजा-पाठ या मंत्रों का जाप करते समय मन में कुछ ऐसे ख्याल लाते हैं जो नुकसान पहुंचा सकते हैं। आपको कभी भी अशुद्ध मन से गायत्री मंत्र का जाप नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आपके जीवन में समस्याएं आ सकती हैं और आपके बनते काम भी बिगड़ सकते है।
कोशिश करें कि आप अच्छी तरह से मंत्र पर ध्यान केंद्रित करने के बाद ही इसका जाप करें।
उचित समय पर ही करें गायत्री मंत्र का जाप
आपको हमेशा मंत्र का जाप करते समय सही समय का ध्यान रखना चाहिए। यह मंत्र आमतौर पर दिन के तीन मुख्य समय पर किया जा सकता है। इसके लिए सबसे अच्छा समय ब्रह्म मुहूर्त माना जाता है। आपको हमेशा ब्रह्म मुहूर्त में ही जाप शुरू करना चाहिए और कोशिश करें कि सूर्योदय तक इसका समापन कर दें। इस मंत्र का जाप शाम के समय सूर्यास्त से पहले भी किया जा सकता है।

गलत दिशा में बैठकर न करें गायत्री मंत्र का जाप

शास्त्रों के अनुसार गायत्री मंत्र का जाप करते समय आपको दिशा का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि आप सुबह इस मंत्र का जाप कर रहे हैं तो इसे पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके पढ़ें। ऐसा इसलिए अच्छा माना जाता है क्योंकि सूर्य इसी दिशा से निकलता है और इस दिशा की तरफ बैठकर जाप करने से गायत्री मंत्र के साथ सूर्य की पूर्ण ऊर्जा भी घर में प्रवेश करती है।

रुद्राक्ष की माला से करें मंत्र जाप

गायत्री मंत्र का जाप करते समय यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आप रुद्राक्ष की माला का उपयोग करें। रुद्राक्ष की माला को गायत्री मंत्र जाप के लिए सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा, आप तुलसी और चंदन की माला का भी उपयोग कर सकते हैं।
गायत्री मंत्र, जिसे वेदों की माता कहा जाता है, का जाप हमारे मन और आत्मा को शुद्ध करने के लिए अत्यंत प्रभावी होता है। इस मंत्र का नियमित जाप करने से मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।
रुद्राक्ष की माला का उपयोग विशेष रूप से इसलिए किया जाता है क्योंकि इसे पवित्र और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना जाता है। रुद्राक्ष में अद्वितीय ऊर्जा होती है, जो व्यक्ति के मन को स्थिर और ध्यान केंद्रित रखने में मदद करती है।

किस दिशा में मुख करके करें गायत्री मंत्र का जाप?

गायत्री मंत्र का जाप पूर्व दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। पूर्व दिशा को सूर्योदय की दिशा माना जाता है और सूर्य को देवताओं का देवता माना जाता है। इसलिए, पूर्व दिशा में मुख करके जाप करने से सूर्यदेव की कृपा प्राप्त होती है। उत्तर दिशा को भी गायत्री मंत्र जाप के लिए शुभ मानते हैं। उत्तर दिशा को ज्ञान और शांति की दिशा माना जाता है। इसके अलावा पश्चिम या दक्षिण दिशा में भी मुख करके गायत्री मंत्र का जाप करना उत्तम फलदायी माना जाता है।

गायत्री मंत्र का जाप करने का महत्व क्या है?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि गायत्री मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को कभी भी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है। साथ ही अगर आपके जीवन में किसी तरह की कोई परेशानी चल रही है, तो उससे भी छुटकारा मिल जाता है। आप गायत्री मंत्र का कम से कम 108 बार जाप जरूर करें। गायत्री मंत्र का जाप करने से बुद्धि का विकास होता है और याददाश्त तेज होती है। गायत्री मंत्र का जाप करने से एकाग्रता बढ़ती है। गायत्री मंत्र का जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। इसके अलावा अगर आप मानसिक परेशानी से जूझ रहे हैं, तो उससे भी छुटकारा मिल जाता है।

रामायण से कैसे बना गायत्री मंत्र? किसने की थी रचना

गायत्री मंत्र का जाप करने से मनुष्य के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, मानसिक तनाव कम होता है, जीवन में शांति एवं समृद्धि आती है।

गायत्री मंत्र हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र और प्रभावशाली मंत्र है, जिसका विशेष महत्व है। यह मंत्र भगवान सूर्य को समर्पित होता है और आत्मा के शुद्धिकरण, मानसिक शांति, और दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। गायत्री मंत्र का उचारण व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। यह मंत्र ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव के तत्वों से जुड़ा हुआ है। इसका उद्देश्य साधक को आत्मज्ञान, तात्त्विक समझ और ब्रह्मा की साक्षात प्राप्ति की ओर अग्रसर करना है। गायत्री मंत्र का जाप करने से मनुष्य के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, मानसिक तनाव कम होता है, जीवन में शांति एवं समृद्धि आती है। इस मंत्र के नियमित जाप से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स ने हमें गायत्री मंत्र की उत्पत्ति के बारे में बताया।
रामायण हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों में से एक है, जिसमें भगवान राम और देवी सीता के जीवन की कथा है। इस ग्रंथ में बताया गया है कि कैसे भगवान राम ने रावण जो बुराई का प्रतीक था, उसका वध कर धर्म विजय प्राप्त की। रामायण में कुल सात अध्याय हैं और इसमें लगभग 24,000 श्लोक हैं।
रामायण में एक राजा, आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श पत्नी, आदर्श भाई और आदर्श सेवक के रूप में रिश्तों और उनके कर्तव्यों का वर्णन किया गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है, जिसमें आदि का अर्थ है प्रथम और काव्य का अर्थ है कविता।
इसी दिव्य रामायण से बना था गायत्री मंत्र जिसकी रचना भगवान श्री राम के कुल गुरु ऋषि विश्वामित्र ने की थी। असल में रामायण में मौजूद 24,000 श्लोकों से ही गायत्री मंत्र को बनाया गया था। रामायण के हर 1000 श्लोकों के बाद आने वाले पहले अक्षर से गायत्री मंत्र को रचा गया था।
गायत्री मंत्र ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात में 24 अक्षर हैं। ऐसे में हर हजार श्लोकों के बाद के पहले अक्षर को जोड़ा जाए तो 24 अक्षरों का समूह बनता है और इसी से उत्पत्ति हुई गायत्री मंत्र की जिसे ब्रह्म मुहूर्त में जपना अत्यधिक लाभकारी माना जाता है।

अपनी राशि के अनुसार धारण करें रत्न, बनी रहेगी सुख समृद्धि

रत्नों को लंबे समय से ऊर्जा और भाग्य का शक्तिशाली प्रतीक माना जाता रहा है। ज्योतिष के क्षेत्र में, इन कीमती पत्थरों का एक विशेष महत्व बताया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वे प्रत्येक राशि की अनूठी विशेषताओं और व्यक्तित्व के साथ जोड़े जाते हैं। इसलिए यदि आप अपनी राशि को ध्यान में रखते हुए रत्नों का चुनाव करती हैं और उन्हें किसी न किसी रूप में धारण करती हैं तो आपकी समृद्धि बनी रहती है।

मेष राशि - अपनी गतिशील ऊर्जा के लिए जानी जाने वाली उग्र राशि मेष के लिए दो रत्न बहुत ज्यादा लाभदायक हो सकते हैं। पहला मंत्रमुग्ध कर देने वाला माणिक है, यह एक ऐसा पत्थर है जो जुनून और जीवन शक्ति का संचार करता है। यह मेष राशि के लोगों को उनकी आंतरिक शक्ति और साहस को बढ़ाने में मदद करता है। एक अन्य रत्न जिसे मेष राशि का पूरक माना जाता है, जीवंत कार्नेलियन है। यह जेमस्टोन प्रेरणा, रचनात्मकता और आत्म विश्वास जगाता है और मेष राशि वालों को निडरता से नए प्रयासों को शुरू करने के लिए सशक्त बनाता है।

वृषभ राशि - वृषभ राशि के लोग, जो अपनी स्थिरता और जमीन से जुड़े स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। इन लोगों के लिए पन्ना सबसे अच्छा रत्न माना जाता है। यह रत्न प्रेम, विश्वास और समृद्धि को बढ़ावा देता है, जिससे वृषभ राशि के लोग मजबूत संबंध बनाने और प्रचुरता प्रकट करने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, कोमल गुलाब क्वार्ट्ज वृषभ की भावनात्मक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है।

मिथुन राशि - मिथुन, सामाजिक और बौद्धिक वायु चिह्न, एक्वामरीन की शांत ऊर्जा से लाभ पा सकता है। यह रत्न संचार, स्पष्टता और बौद्धिक खोज को बढ़ाता है, मिथुन राशि वालों को अपने विचारों और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सहायता करता है।

कर्क राशि - भावनात्मक और सहज ज्ञान युक्त कर्क राशि ईथर मूनस्टोन से लाभ पा सकती है। यह रत्न चुनौतीपूर्ण समय में शांति की भावना प्रदान करते हुए कर्क राशि की संवेदनशीलता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक स्थिरता का पोषण करता है। इसके अतिरिक्त, चमकदार मोती प्रेम, पवित्रता और शांति का प्रतीक माना जाता है, जो कर्क राशि के पोषण गुणों को बढ़ाता है।

सिंह राशि - आत्मविश्वासी और करिश्माई सिंह राशि के लिए, दो रत्न अलग दिखते हैं। पहला है सनस्टोन जो सूर्य की उज्ज्वल ऊर्जा को दर्शाता है। यह सिंह राशि के नेतृत्व गुणों, आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन शक्ति को बढ़ाता है। सिंह राशि के लिए उपयुक्त एक और रत्न है गोल्डन सिट्रीन। ऐसा माना जाता है कि यह स्टोन बहुतायत और अच्छे भाग्य को आकर्षित करता है, सिंह के चुंबकीय व्यक्तित्व को बढ़ाने में मदद करता है।

कन्या राशि - विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक कन्या राशि के लिए, पेरिडॉट एक शक्तिशाली रत्न के रूप में कार्य करता है। यह कन्या की सफलता और सकारात्मक परिवर्तन की इच्छा के अनुरूप है। पेरिडॉट जीवन में स्पष्टता, प्रचुरता और सुरक्षा लाता है, जिससे कन्या राशि के लोग आत्मविश्वास के साथ जीवन को नेविगेट कर सकते हैं।

तुला राशि - तुला राशि जो अपने कूटनीतिक स्वभाव और सुंदरता के साथ प्यार के लिए जानी जाती है। यह दो उत्तम रत्नों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकती है। इस राशि के लिए नीलम रत्न सबसे ज्यादा शुभ हो सकता है जो निष्पक्षता और संतुलन के लिए मदद करता है। तुला राशि के लिए अनुकूल एक और रत्न है ओपल यह तुला की रचनात्मकता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाता है।

वृश्चिक राशि - वृश्चिक राशि के लोग, जो अपनी तीव्रता और परिवर्तनकारी प्रकृति के लिए जाने जाते हैं, शक्तिशाली पुखराज की ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं। यह रत्न सफलता, साहस और जुनून को बढ़ावा देता है, वृश्चिक को बाधाओं को दूर करने और व्यक्तिगत विकास को अपनाने के लिए सशक्त बनाता है।

धनु राशि - साहसी और दार्शनिक धनु राशि के लिए फिरोजा रत्न सबसे शुभ माना जाता है। यह स्वतंत्रता, भाग्य और आध्यात्मिक विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है और धनु राशि को नए अनुभवों को अपनाने और अपने क्षितिज को व्यापक बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। धनु राशि (धनु राशि के लोगों का स्वभाव) के लिए अनुकूल एक अन्य रत्न रहस्यमयी लापीस लाजुली है, जो ज्ञान और सच्चाई का प्रतीक है, जो स्वयं और दुनिया की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

मकर राशि - मकर राशि के लिए पारंपरिक भाग्यशाली रत्न गार्नेट है। ऐसा माना जाता है कि गारनेट मकर राशि से जुड़े सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है, जैसे महत्वाकांक्षा, अनुशासन और व्यावहारिकता। यह भी कहा जाता है कि यह सुरक्षा प्रदान करता है और समग्र जीवन शक्ति को बढ़ाता है। गार्नेट पहनने या धारण करने से मकर राशि वालों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

कुंभ राशि - कुंभ राशि के लिए पारंपरिक भाग्यशाली रत्न नीलम है। नीलम एक सुंदर बैंगनी क्वार्ट्ज क्रिस्टल है जो कुंभ राशि से जुड़े सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है जैसे कि बौद्धिकता, अंतर्ज्ञान और मानवतावाद। ऐसा कहा जाता है कि यह दिमाग को उत्तेजित करता है, विचारों की स्पष्टता को बढ़ावा देता है और आध्यात्मिक विकास में सहायता करता है। ऐसा माना जाता है कि नीलम कुंभ राशि के व्यक्तित्व में संतुलन और सामंजस्य लाता है। नीलम पहनने या धारण करने से कुंभ राशि वालों को अपनी अनूठी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिलती है।

मीन राशि - दयालु और कल्पनाशील मीन राशि के लिए, एक्वामरीन एक शक्तिशाली रत्न के रूप में कार्य करता है। यह मीन राशि वालों के अंतर्ज्ञान, आध्यात्मिक जागरूकता और भावनात्मक स्पष्टता को बढ़ाता है, जिससे उनकी भावनाओं की गहराई को नेविगेट करने में सहायता मिलती है।